1. सातवाहनों का उदय**:**

- सातवाहन पहली शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास भारत के दक्कन क्षेत्र में एक शासक राजवंश के रूप में उभरे।
- Their capital was initially located at Pratishthana (modern Paithan in Maharashtra).

2. प्रशासनिक एवं राजनीतिक संरचना**:**

- सातवाहन प्रशासन मौर्य प्रशासनिक प्रथाओं से प्रभावित था।
- उन्होंने स्थानीय और प्रांतीय शासकों के साथ विकेन्द्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली के माध्यम से शासन किया।
- सातवाहन राजाओं ने "महाराजा" और "सातवाहन" उपाधियाँ अपनाईं और उन्होंने विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी किए।

3. साम्राज्य का विस्तार**:**

- सातवाहन साम्राज्य ने दक्कन, मध्य भारत के कुछ हिस्सों और पूर्वी तट सहित भारत के एक महत्वपूर्ण हिस्से में अपना प्रभाव बढ़ाया।
- उन्होंने उत्तरी और दक्षिणी भारत को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. अर्थव्यवस्था और व्यापार**:**

- सातवाहन व्यापार में सक्रिय रूप से शामिल थे, और उनके साम्राज्य को प्रतिष्ठान (पैठन) और तगारा जैसे बंदरगाहों के माध्यम से दक्कन को भूमध्य सागर से जोड़ने वाले व्यापार मार्गों से लाभ हुआ था।
- उन्होंने व्यापार और वाणिज्य में अपनी भूमिका पर जोर देते हुए बड़ी मात्रा में सिक्के ढाले।

5. बौद्ध धर्म और अन्य धर्मों का संरक्षण**:**

- सातवाहन बौद्ध धर्म के साथ-साथ हिंदू और जैन जैसे अन्य धर्मों के संरक्षण के लिए जाने जाते थे।
- उन्होंने दक्कन क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रसार में योगदान दिया।

6. कला एवं संस्कृति**:**

- सातवाहन काल में महत्वपूर्ण कलात्मक और स्थापत्य विकास हुआ।
- अमरावती, एक प्रसिद्ध स्तूप और नासिक की गुफाएँ सातवाहन वास्तुकला के उदाहरण हैं।

7. अस्वीकार:

- तीसरी शताब्दी ई.पू. के आसपास सातवाहन साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।
- आंतरिक कलह, बाहरी आक्रमण और क्षेत्रीय शक्तियों के उद्भव सहित विभिन्न कारकों ने उनके पतन में योगदान दिया।
- आंध्र प्रदेश का इक्ष्वाकु वंश उनका उत्तराधिकारी बना।

8. विरासत:

- सातवाहनों ने दक्षिण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और उनका शासन मौर्य युग से अधिक विकेन्द्रीकृत और क्षेत्रीय राजनीतिक परिदृश्य में परिवर्तन का प्रतीक है।
- उन्होंने दक्कन और दक्षिणी भारत में भारतीय संस्कृति और व्यापार नेटवर्क के प्रसार में योगदान दिया।

LEARNING MANTRAS